शताब्दी स्मृति ग्रंथ

॥ श्री चन्द्रविहारिणे नमः ॥

राजगुरु कथाभट्ट श्री जगदीश चन्द्र शर्मा

जन्म शताब्दी (1916–2016)

।। श्री चन्द्रविहारिणे नमः ।।

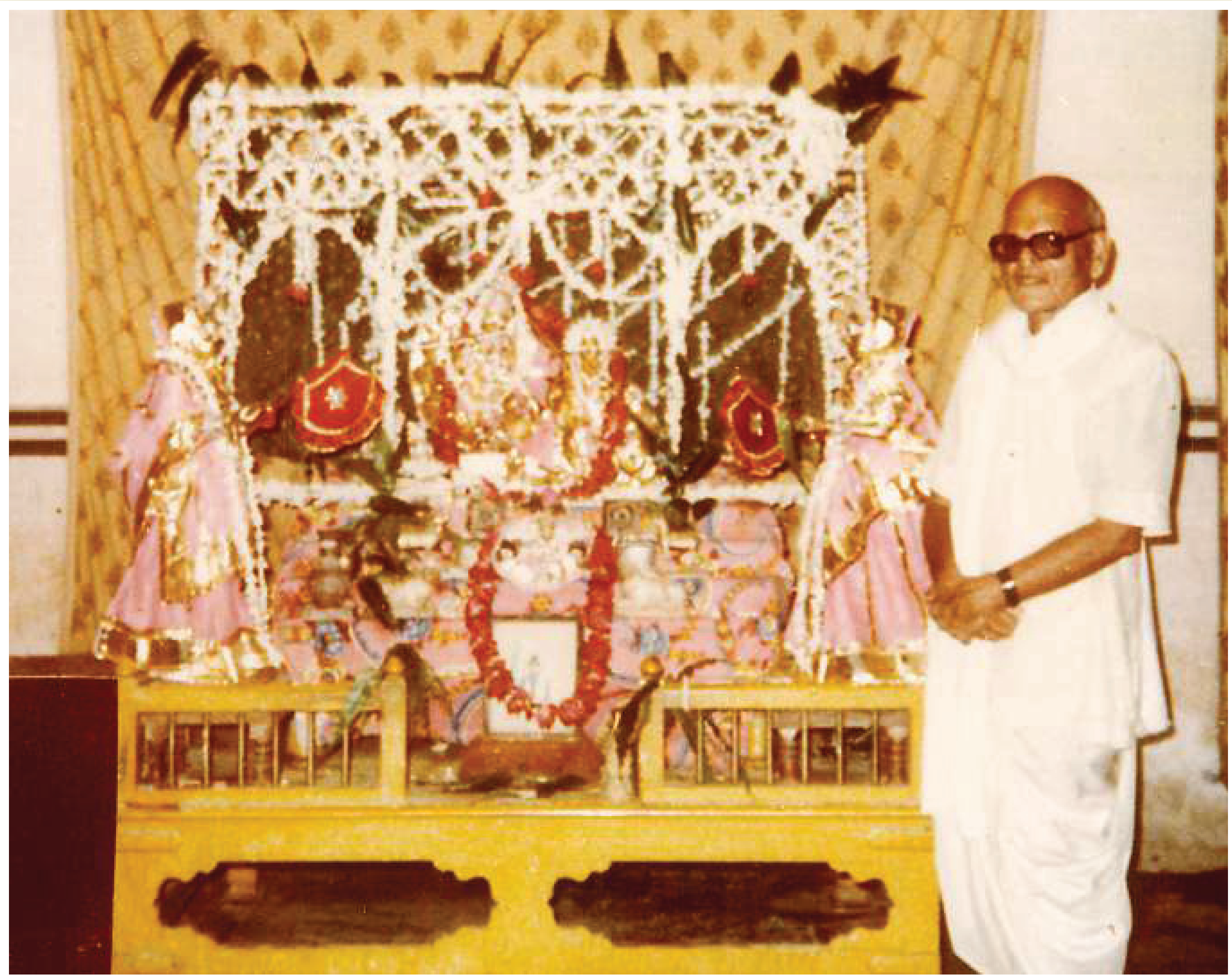

राजगुरु कथाभट्ट श्री जगदीश चन्द्र शर्मा

जन्म शताब्दी (1916-2016)

चन्द्रविहारी जी

मोती डूंगरी गणेश जी

With Compliments from

The Family of Rajguru Kathabhatt
Shri Jagdeesh Chandra Ji Sharma

Kindly direct your opinion, comments & questions to:
Rajguru Kathabhatt Dr. Subodh Chandra
Dr. Ravi Dutta, Dr. Govind Chandra
Champavatji Ka Mandir, Johari Bazar, Jaipur- 302003
Ph. : +91 94133 43268, 96366 58888
www.rajgurukathabhatt.org

आदिपुरूष चाँपावतजी का मन्दिर

डीलां श्री हरगोविन्द जी

राजगुरु कथाभट्ट

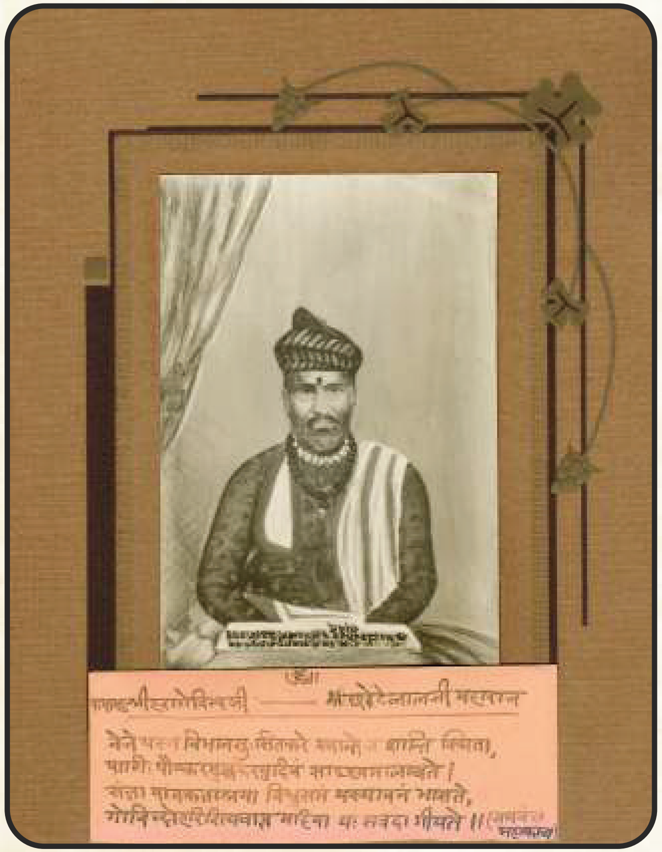

ॐ

कथाभट्ट श्री हरगोविन्दजी – श्री छोटेलाल जी महाराज

नेत्रेपस्य विभावसुः सितकरे स्वान्ते च शान्ति स्थिता,
पाणिः पौष्करमुच्चकेदनुदिनं सादृश्यमालम्बते।
संज्ञा पावकताश्रया विधुसमं यस्याननं भासते,
गोविन्दोहरिरित्यवाप्त महिमा यः सर्वदा गीयते।।

जयवंश महाकाव्य

राजगुरु कथाभट्ट

श्री जगदीशचन्द्र शर्मा

(राजकीय परिवेश में)

30 वर्ष की आयु में महाभारत
की कथा करते हुए

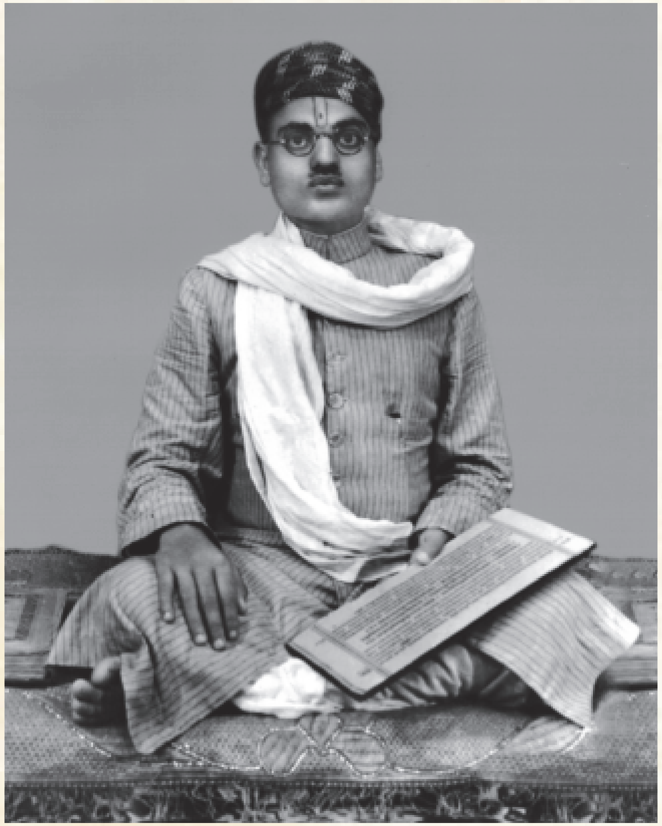

जन्म शताब्दी तिथि पूजा
नवम्बर 11, 2016

H. H. Maharaja Sawai Man Singh Ji
with RajGuru Kathabhatt Jagdish Chandra Ji
1968

पूज्या माँसाहब, मामाश्री कल्याण वल्लभ जी शास्त्री
रा. क. श्री जगदीश चन्द्र जी तीनो पुत्रों सहित

सम्पादकीय

"गुरवे सर्वलोकानां भिषजे भवरोगिणाम्।
निधये सर्वविद्यानां दक्षिणामूर्त्तये नमः।।"

प्राचीन ढूंढाड प्रदेश के गौरव अम्बावती आमेर के सूर्यवंशीय कछवाहों की शासक परंपरा में वेद, पुराण, उपनिषद्, वेदाङ्गों के संरक्षण के साथ उनके प्रचार–प्रसार की भावना सतत प्रवाहित रही है। यहां के राजा महाराजाओं में आनुवंशिक विरासत के रूप में प्राप्त गुण वैशिष्ट्य के फलस्वरूप भारतीय संस्कृत वाङ्मय निरन्तर समृद्धि को प्राप्त होता रहा है। कालान्तर में जयपुर स्थापना के सूत्रधार महाराज सवाईजयसिंह ने यज्ञ–यागादि के आयोजनों में भारत के वेद एवं संस्कृत के प्रख्यात विद्वानों को जयपुर में समुचित सम्मान प्रदान कर यहीं बसा लिया। संस्कृत विद्या के क्षेत्र में एक महनीय एवं गौरवशाली विद्वत्परंपरा सुप्रतिष्ठित हुई और इसे अपराकाशी का सम्मान मिल सका। वेद एवं वेदाङ्गों में जहां पं. मधुसूदन ओझा, पं. मोती लाल शास्त्री, पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी आदि अनेक मनीषियों ने जयपुर का परचम लहराया और सवाई रामसिंह जी महाराज द्वारा महाराज संस्कृत कॉलेज की स्थापना कर संस्कृत वाङ्मय की सेवा को विस्तार प्रदान करते हुए छात्रों को संस्कृत–अध्ययन की ओर प्रेरित किया। इन्ही में देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में प्रस्तुत ग्रंथ के चरित्रनायक राजगुरू कथाभट्ट पं. श्री जगदीशचन्द्र शर्मा के पूर्वज पोकरण (जैसलमेर) से जयपुर आये थे। कथाभट्ट पं. श्री छोटेलाल नामावाल ने अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं शास्त्रीय ज्ञान के प्रखर मनीषी के रूप में तत्कालीन जयपुर नरेश महाराज सवाईरामसिंह जी से राजगुरू के रूप में कथाभट्ट का सम्मान प्राप्त किया।

भरतवर्ष में काशी की पण्डित परम्परा के पश्चात् जयपुर का द्वितीय स्थान ऐसे ही मनीषियों के कारण कायम रहा। चांपावत जी का मंदिर जो कि जौहरी बाजार में स्थित है – धर्मस्थल के रूप में कथाकार श्री कथाभट्ट जी का तपःपूत केन्द्र रहा है जिसे सवाई रामसिंह जी महाराज ने महाभारत कथा के एवं श्रीमद्भागवत कथा के मर्मज्ञ एवं सुमधुर कथा श्रवण कर सम्मान स्वरूप जागीर के रूप में श्री कथाभट्ट छोटेलाल जी को भेंट किया और स्वयं को धन्य समझा।

इन्ही के वंशज श्री जगदीश चन्द्र जी कथाभट्ट विनम्र, सरल, मृदुभाषी, स्वाभिमानी किंतु करूणा के प्रतिमूर्त्ति थे। इनके व्यक्तित्त्व में जहां असाधारण वैदुष्य था तो वहीं धर्म एवं संस्कृति के समुन्नयन हेतु समर्पण का अविचल भाव प्रवाह था। विवादों से बेखबर 'यतो धर्मस्ततो जयः' के मर्म को अपने विशाल ह्रदय में लिए हुए **'चरन् वै मधु विन्दति'** के साथ आयु के उत्तरार्द्धकाल तक अपनी कर्मस्थली को अपनी सुमधुर कथाओं द्वारा सींचते हुए राजा व प्रजा की व्यथा को हरण करते चले गए। धीर–गंभीर, पूज्य कथाभट्ट जी महाराज के विषय में निम्न नीति श्लोक को उद्धृत करना उन्हें संस्कृत जगत् एवं परिवारजनो की ओर से श्रद्धा, सुमन अर्घ्य समर्पण करना प्रासंगिक रहेगा –

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायपथात् प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

मानव कल्याण को ही भगवदीय आराधना मानने वाली ऐसी विभूति के लिए गीता का यह मर्म वाक्य **"यद् यद् विभूति मत्सत्त्वं"** कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी जिन्होंने प्रदेश की सीमाओं को लांघकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपनी कथाओं, व्याख्यानों द्वारा जयपुर को कीर्तिमान बनाया न केवन दाधीच कुलको गौरवान्वित किया अपितु संस्कृत विद्वानों के कुल को सुसमृद्ध बनाया और इसी अनुष्ठान में अपने जीवन को होम दिया।

शताब्दी ग्रंथ को पांच भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में विश्व विख्यात विद्वानों के लेखों का संग्रह किया गया है। द्वितीय भाग में राजगुरु कथाभट्ट जी (चरितनायक) द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गये विद्वत्तापूर्ण लेखों का संग्रह प्रस्तुत किया गया है। चाँपावत जी के मन्दिर का वास्तुशिल्प को शास्त्रीय सिद्धान्त के अनुरूप प्रस्तुत किया गया है। तृतीय भाग में सवाई मानसिंह जी एवं आचार्य निरंजन नाथ जी को दी गई श्रद्धांजलि प्रस्तुत है। चतुर्थ खण्ड में विभिन्न विद्वानों, सम्बन्धियों, मित्रों के द्वारा श्रद्धासुमन संस्मरणों के रूप में प्रस्तुत किये गये है। पंचम खण्ड में पारिवारिक इतिहास वंशजों के ज्ञान के लिये संकलित कर प्रस्तुत किया जा रहा है। यद्यपि श्री कथाभट्ट जी की लेखिनी गद्य पद्य नाटक सभी क्षेत्रों में अनवरत प्रवाहित रही है। किन्तु स्थानाभाव के कारण पद्यों एवं नाटकों को शताब्दी ग्रंथ में प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है। उनका भविष्य में पृथक से प्रकाशन किया जाना संभव हो सकेगा। मधुर स्मृतियों को सहेजते हुए कतिपय चित्रों का प्रकाशन भी इस ग्रंथ में किया जा रहा है।

राजगुरू कथाभट्ट जगदीशचन्द्र जी शर्मा, जिनको आदर एवं स्नेह से **"दादाजी"** भी कहते थे, के जन्मशताब्दी समारोह के इस अवसर पर प्रकाशित यह ग्रंथ एक पितृ अर्चन परंपरा के रूप में आप सब विद्वानों द्वारा प्रदान किया जाने वाला अर्घ्य रूप में प्रस्तुत है। संस्कृत विद्वानों के समक्ष अपने आपको अल्पमति मानते हुए त्रुटियों के लिए क्षमायाचना करते हैं।

सम्पादक मण्डल

डॉ. मण्डन शर्मा
पूर्व निदेशक,
संस्कृत शिक्षा विभाग, जयपुर

डॉ. (श्रीमती) रेणुका राठौड
पूर्व निदेशक,
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

विषयानुक्रमणिका

विद्वत्लेख – खण्ड़

महाभारत : ग्रन्थ विषयक भ्रान्तियां और निराकरण – पं. अनन्तराम शर्मा 1
वन्दनीय व्यासम् : पं. श्रीजानकी राम शास्त्री 8
जयपुर में संस्कृत–वैदुष्य–परम्परा – महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री 11
महाभारत की महाकथा –आचार्य दयानन्द भार्गव 17
महाभारत के कृष्ण –राजगुरु कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 21
चाँपावत जी के मंदिर की स्थापत्य कला –श्रीमती कल्पना पण्डित, श्री पुष्पक पण्डित 24

कृतित्व – खण्ड़

जगन्मंगल गोविन्ददेव –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 33
मीरा –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 35
जय जय जमुआ माता –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 41
महाशक्ति श्री दधिमति – कुलदेवी –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 45
महाशिवरात्री–पर्व की अपूर्वता –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 49
रासेश्वर कृष्ण –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 51
धारणा–धर्म–धरणी त्रिपथगा–सृष्टि (त्रिलोकी) –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 53
''यतो धर्मस्ततोजयः।'' –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 60

दादाजी व्यक्तव्य

स्व.महाराजाधिराज श्री सवाई मानसिंहजी को श्रद्धान्जलि 66
श्री निरंजन नाथ आचार्य के निधन पर उद्बोधन 66

श्रद्धांजलि–संस्मरण एवं समर्पण

–राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा के विवाह अवसर पर मंगल कामना – श्री गोविन्द शर्मा, 69
को हि विज्ञातुमर्हति – प्यारे मोहन शर्मा 70
एक श्रेष्ठतम व्यक्तित्व – प्रो. डॉ. श्रीमती विनय शर्मा 72
परम पूज्यदादाजी–कथाभट्ट जी महाराज – राकेश कुमार भट्ट, लोकेश कुमार भट्ट 73
अविस्मरणीय संस्मरण – रमेशचन्द्र शर्मा, श्रीमती गणेश शर्मा 74
संस्मरण – दीनानाथ शर्मा 75
परम आदरणीय राजगुरु कथाभट्ट – रामदत्त दाधीच 75
Pandit Jagdeesh Chandra Kathabhatt: A Legendary Personality -
Dr. K. G. Dayama 76
पूज्य दादाजी – श्रीमती पुष्पा एवं गणपत लाल दाधीच 77
आदरणीय कथाभट्टजी महाराज कतिपय स्मृतियाँ – भालचन्द्र व्यास 77
राजगुरु कथाभट्ट श्री जगदीशचन्द्र जी महाराज – डॉ. ज्वालादत्त शर्मा 78

मेरे आदरणीय दादा भाइजी – पं. योगेश चन्द्र शर्मा दाधीच 79
'धर्म–कर्मनिष्ठ–ताऊजी' – नरेश चन्द्र शर्मा 81
बी–134 की स्मृतियाँ – सुरेश व्यास श्रीमती देवकन्या व्यास 81
श्रद्धांजलि – सुरेन्द्र नाथ मेहरोत्रा 82
परिवार परिचय – श्रीमती विजयलक्ष्मी दाधीच, 82
कीर्ति पुरूष दादाजी – गणपत आचार्य 84
मृदूनी कुसुमादपि – डॉ मण्डन शर्मा 86
एक वरेण्य व्यक्तित्त्व – आर. एस. गोठेचा 87
मामाजी के संस्मरण – डॉ. ताराप्रकाश जोशी 88
पितृतुल्य दादाजी – श्रीमती मीनाक्षी, प्रेम सुख शर्मा 88
In Memory of Jija Saheb - Dr. Krishna Chandra Joshi 89
मेरे निर्माता, मार्गदर्शक, प्रेरक के जन्म 90
शताब्दी पर शत–शत नमन – तेजप्रकाश 91
श्रद्धेय दादाजी – बालकृष्ण व मीनाक्षी 92
पितुः स्मृत्यै नमाम्यहम् – सुबोध चन्द्र शर्मा 92
श्रद्धांजलि 'मेरे स्नेहमय पूज्य' – श्रीमती सुशीला 94
Pitashri Dadaji: Krishna, Matri, Gurujananam - Bhakta, Masaheb,
Dadaji - Dhayji, and Bapusaheb - Ravi's Dutt Sharma 94
Dadaji Was Anmol - Sneh Prabha Sharma 97
Reminiscing About My Father: Shri Jagdeesh Chandra Sharma-Govind Chandra Sharma 98
पिता श्री (दादाजी) – गोविन्द चन्द्र शर्मा 100
Dadaji My respected Father-in-law - Prabha Sharma 101
Baba's Memoirs - Amit Sharma 102
सरलता– बाबा तुम्हारी विरासत – मयंक शर्मा 102
In memory of My Grandfather: Shri Jagdeesh Chandraji Sharma - Dr. Manan Sharma 103
कथाभट्टकीर्ति कौमुदी – श्रीमती इन्दु मण्डन शर्मा 103

पारिवारिक इतिहास

A Privileged Life: Story of the Sharmas: Subodh Chandra Sharma,
Ravi Dutta Sharma, Govind Chandra Sharma 105
पिताश्री : एक संस्मरण – –राजगुरू कथाभट्ट जगदीश चन्द्र शर्मा 129
Chronology of Visits to Haridwar (Table) 131